आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2236 • उदयपुर, शनिवार 06 फरवरी, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

देश में टीकाकरण अभियान के लिए वायु सेना का सहयोग

देश में कोविड –19 टीकाकरण अभियान के लिए भारतीय वायु सेना और कमर्शियल एयरलाइंस का देश भर में दो टीकों सीरम इंस्टीट्यूट की कोविशील्ड और भारत बायोटेक की कोवैक्सीन को वितरित करने के लिए बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाना है। वायु सेना के सी –130 जे और एएन –32 सहित परिवहन विमानों का उपयोग देश के दूरदराज के हिस्सों में टीकों को लेने के लिए आपूर्तिकर्ताओं द्वारा विशेष कंटेनरों में टीके प्रदान करने की व्यवस्था की जा रही है।

वायु सेना के विमानों का उपयोग अरुणाचल प्रदेश और केंद्रशासित प्रदेश के लद्दाख जैसे राज्यों में दूरदराज के हवाई क्षेत्रों और उन्नत लैंडिंग के टीकों को उड़ाने के लिए किया जाना है।

यदि आवश्यक हो तो योजना के अनुसार, सैन्य बल कोरोना वायरस के टीके को दूर–दराज के स्थानों पर ले जाने के लिए अपने हेलीकॉप्टर बेड़े का भी उपयोग करेगा। टीकों के परिवहन पर चर्चा अभी जारी है और विस्तार को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

अंतरिक्ष में जाने के लिए देसी स्टार्ट अप की होड़

1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण ने भारत को मजबूत वैश्विक आर्थिक शक्ति बनाया तो अब अंतरिक्ष क्षेत्र में उदारीकरण से वैश्विक बाजार में बड़ी ताकत बनकर उभर सकता है। देश में अंतरिक्ष क्षेत्र में अभी तक भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) तक ही सीमित रहा है, लेकिन अब निजी कंपनिया भी इस क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही है।

अगले महीने इसरो निजी क्षेत्र के पहले उपग्रह का प्रक्षेपण करेगा तो इस साल के अंत तक निजी क्षेत्र के पहले राकेट के परीक्षण की भी संभावना है। इसरो के लिए करीब 300 कंपनियां पहले से ही काम करती रही है, लेकिन निजी क्षेत्र के लिए द्वार खोले जाने के बाद कई अंतरिक्ष स्टार्ट अप कंपनियां प्रक्षेपण यान, प्रणोदन प्रणाली से लेकर उपग्रह निर्माण के लिए आगे आई है। इन–स्पेस के साथ काम करने के लिए 26 देशी–विदेशी कंपनियों ने इच्छा जताई है। इनमें नामी कंपनियों की तुलना में स्टार्ट अप ज्यादा है।

न धन की कमी, न अवसरों की कोरोना महामारी के बावजूद तीन स्टार्ट कंपनिया देशी–विदेशी निवेशको से धन जुटाने में सफल रही है। पिक्सल ने 5 मिलीयन डॉलर तीन निवेशकों से जुटाए तो अग्निकुल ने एक वेंचर्स निवेशक कंपनी से 23. 5 करोड़ रुपए और पुणे की वेस्टा स्पेस ने एक अमरीकी निवेशक से 10 मिलीयन डॉलर।

स्पेस टेक का वैश्विक बाजार 350 बिलियन डॉलर का, स्पेस टेक का वैश्विक बाजार 350 बिलियन डॉलर का है जबकि वैश्विक वाणिज्यिक उपग्रह इमेजिंग का बाजार वर्ष 2025 तक 4.7 बिलियन डॉलर का होने की संभावना है। इन स्टार्ट अप के उपग्रहों के लिए वैश्विक ग्राहक भी मिल रहे है। पिक्सल ने मौसम की जानकारी उपलब्ध कराने वाली वैश्विक कंपनी के साथ इटली की एक कंपनी से भी करार किया है।

सेवा पथ पर आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

नारायण सेवा ने गरीबों को बांटी कम्बलें

पीड़ित मानवता की सेवा से समर्पित नारायण सेवा संस्थान ने हाड़ तोड़ ठिठुरती ठड़ में शहर के आसपास के गांवों और कच्ची बस्ती में पिछले एक माह में हजारों कम्बल जरूरतमंदों को बांटी । संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल की टीम ने बेदला, बड़गांव ओर लोयरा क्षेत्र व कच्ची बस्तियों में जाकर गरीबों को कंबलें ओढ़ाई। इस कड़कड़ाती सर्दी में संस्थान का ज्यादा से ज्यादा लोगों तक मदद पहुंचाने का प्रयास है। आपश्री भी इस मुहिम में मदद भिजवा सकते हैं।

उमेश की दो साल से रुकी जिन्दगी शुरु

चोरी–चोरा, गोरखपुर (यू.पी.) निवासी 27 वर्षीय उमेश कुमार राजभर करीब 2 साल पहले एक रेल दुर्घटना के शिकार हो गए। दुर्घटना का जिक्र करते हुए वे रूंधे गले से बताते हैं कि मां–पिता की मौत तो मेरे लड़कपन में हो गई थी। खैर ईश्वर की मर्जी के आगे किसी की नहीं चलती। भाभी और भाई ने मुझे बड़ा कर किया। परिवार की मदद के लिए लोहे के कारखाने में मजदूरी करने लगा। घरवालों से मिलने के लिए गांव जा रहा था कि चलती ट्रेन में चढ़ते वक्त गिर पड़ा। मुझे तो कुछ सुध नहीं रही बांया पांव पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। किसी ने मुझे हॉस्पीटल पहुंचाया। वहां करीब 1 माह तक इलाज चला जिसके दौरान घुटने के नीचे से पांव काटना पड़ा। कल तक दौड़ रही जिन्दगी एकाएक थम गई। बेड पर बैठे रहने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकता। कुछ दिन पहले किसी परिचित ने नारायण सेवा संस्थान की जानकारी दी तो मैं 4 जनवरी को उदयपुर पहुंचा। संस्थान की प्रोस्थेटिक टीम ने कटे पांव का मेजरमेंट लिया और कृत्रिम पांव लगा दिया। अब मैं अपने पांवों पर चलने लगा हूं। मै इतना खुश हूं कि कह नहीं पा रहा .... बस इतना ही कहूंगा कि मेरी जिन्दगी रूक गई थी जिसे फिर से शुरू करने वाली नारायण सेवा संस्थान और इनके डॉक्टर्स व टीम को बहुत धन्यवाद ... आपने कृत्रिम अंग का मुझे उपहार दिया है ... मैं इसके लिए बहुत आभारी रहूंगा....

घमण्ड को गिराना है

एक राजा भगवान महावीर स्वामी से मिलने जाया करते थे। वे महावीर को कीमती आभूषण और अन्य उपहार देने की कोशिश करते थे। लेकिन, स्वामीजी हर बार राजा से कहते थे, इन्हें गिरा दो। राजा उनकी आज्ञा मानकर वे चीजों वहीं गिरा कर लौट जाते थे।

काफी दिन ऐसे ही चलता रहा। एक दिन राजा ने अपने मंत्री से कहा, मैं इतनी कीमती चीजें महावीर स्वामी को देने के ले जाता हूं, लेकिन वे सभी चीजें वहीं गिराने को क्यों कह देते हैं? मैं भी वो चीजें वहीं गिराकर आ जाता हूं। मैं एक राजा हूं, उन्हें भेंट देना चाहता हूं, लेकिन वे मेरी चीजों का कोई मान नहीं रख रहे हैं। मेरी समझ में ये नहीं आ रहा है कि स्वामीजी ऐसा क्यों कर रहे हैं।

मंत्री बहुत बुद्धिमान था। उसने कहा, आप इस बार खाली हाथ जाएं। कोई भी चीज लेकर ही मत जाइए। फिर देखते हैं, वे क्या गिराने के कहते हैं। राजा को मंत्री की बात अच्छी लगी।

राजा अगली बार खाली हाथ गया तो महावीर स्वामी ने कहा, 'अब खुद को गिरा दो' राजा को समझ नहीं आया कि खुद को कैसे गिराएं? उसने महावीर से कहा, आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आ रही हैं। आप रोज चीजें गिराने के लिए क्यों कह रहे हैं?

महावीर स्वामी ने कहा, आप राजा हैं। आपको लगता है कि आप चीजें देकर किसी को भी जीत सकते हैं। मैंने आपको खुद को गिराने के लिए कहा तो इसका मतलब ये है कि हमारे अंदर जो मैं होता है, वह अहंकार के रूप में होता है। मैं ये कहना चाहता हूं कि अपना अहंकार गिरा दो और फिर यहां खड़े रहो। राजा को बात समझ आ गई कि गुरु के सामने घमंड लेकर नहीं जाना चाहिए।

प्रीति श्रीनिवासन व्हीलचेयर पर बैठकर दिव्यांगों को दिखा रहीं राह

प्रीति श्रीनिवासन पहली राष्ट्रीय स्तर की तैराक और तमिलनाडु के अंडर 19 महिला क्रिकेट टीम की कैप्टन थीं। साल 1997 में 17 साल की उम्र में प्रीती ने नेशनल चौंपियनशिप में स्टेट टीम को लीड किया था, लेकिन पुडुचेरी में हुए एक हादसे के बाद उनके शरीर की गर्दन से नीचे का हिस्सा पैरालाइज हो गया। प्रीति अपने कुछ साथियों के साथ समुद्र किनारे घूमने गईं थीं।

तभी अचानक एक लहर उनसे ऐसे आकर टकराई जिसने प्रीति की जिंदगी बदल डाली। उस वक्त क्या हुआ आसपास मौजूद किसी को समझ नहीं आया, लहरों में फंसी प्रीति सांस रोककर अपनी जिंदगी बचाने में सफल रहीं। जब प्रीति को अस्पताल ले जाया गया, तब पता चला कि उनका शरीर पैरालाइज हो गया।

इस हादसे ने प्रीति से बहुत कुछ छीन लिया पर उन्होंने अपना दुख भुलाकर जरूरतमंद लोगों की मदद करने की ठानी और ऐसे में 'सोल फ्री' संस्था का जन्म हुआ। 'सोल फ्री' एक बहुत मशहूर संस्था है जो विकलांग और जरूरतमंदों को सम्मान की जिंदगी जीने में मदद कर रहा है।

संस्था खासकर महिलाओं को लेकर ज्यादा सजग रहती है। 'सोल फ्री' का मुख्य उद्देश्य रीढ़ की हड्डी की चोट के बारे में लोगों को जागरुक करना, जरूरतमंदों को डोनेशन के जरिए सपोर्ट सिस्टम दिलवाना, उन्हें शिक्षा और रोजगार दिलाना।

देशभर में नारायण सेवा संस्थान की शाखाएं

जबलपुर
आर. के. तिवारी,मो. 9826648133
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन सिटी,माधोंतल, जिला - जबलपुर (म.प्र.)

कोरबा
श्री देवनाथ साहू,मो. 09229429407
गांव- बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला-कोरबा (छ.ग.)

मुम्बई
श्री कमलचन्द लोढ़ा,मो. 08080083655
दुकान नं 660, आर्किडसिटी सेन्टर,द्वितीय मंजिल, बेस्ट डिपो के पास, बेलासिस रोड़, मुम्बई सेन्ट्रल (ईस्ट) 400008

जुलाना मण्डी
श्रीराम निवास जिन्दल,
श्री मनोज जिन्दल मो. 9813707878,108 अनाज मण्डी, जुलाना,जींद (हरियाणा)

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी,न.-028847991
9029643708,10-बी/बी, वाईसराय पार्क,ठाकुर विलेज कान्दीवली,मुम्बई

शाहदरा शाखा
विशाल अरोड़ा-8447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा-9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास,शाहदरा,ईस्ट दिल्ली

हापुड़ (उ.प्र.)
श्री मनोज कंसल मो.-09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस,कबाड़ी बाजार,हापुड़

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल,मो. 09829769960
C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा-311001 (राज.)

अम्बाला केन्ट
श्री मुकुट बिहारी कपूर ,मो. 08929930548
मकान नं.- 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केन्ट, अम्बाला केन्ट-133001(हरियाणा)

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,मो. 09828242497
5-C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़, झोटवाड़ा, जयपुर 302012 (राजस्थान)

अजमेर
सत्य नारायण कुमावत
मो. 9166190962,कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज,किशनगढ़, जिला अजमेर (राज.)

पाली/जोधपुर
श्री कान्तिलाल मूथा,मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़ (राज.)

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग,मो. 9996990807,गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

रतलाम
चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 9752492233,मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम (म.प्र.)

सिरसा, हरियाणा
श्री सतीश मेहता मो. 9728300055
म.न.-705, से.-20,पार्ट-द्वितीय,सिरसा, हरि.

नांदेड़ (सेवा प्रेरक)
श्री विनोद लिंबा राठोड,07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम,मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला - नांदेड़, महाराष्ट्र

पाचोरा (महाराष्ट्र)
श्री सीताराम जी-मो. 9422775375

मन्दसौर
मनोहर सिंह देवड़ा
मो. 9758310864,म.नं. 153, वार्ड नं. 6, ग्राम-गुराड़िया,पोस्ट-गुराड़ियादेदा, जिला - मन्दसौर (मध्यप्रदेश)

डोडा
श्री विक्रम सिंह व नीलम जी कोतवाल
मो. 09419175813, 08082024587
रवाड़ी, उदराना, त. भद्रवा, डोडा (ज.क.)

चुरु
श्री गोरधन शर्मा,मो. 09694218084,गाँव व पोस्ट - झांझड़ा, त. तारानगर, चुरू-331304 (राज.)

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना,मो. 09425050136
A-3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रॉसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ, होशंगाबाद रोड़ जिला - भोपाल (म.प्र.)

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी,मो. 9887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला,मो. 8952859514,
लेडिज फैशन पॉईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर (राज.)

नई दिल्ली
श्री आदेश गुप्ता, मो.9810094875, 9899810905
मकान नं. : ए-141, लोक विहार, पितमपुरा, नॉर्थ वेस्ट दिल्ली

आकोला
हरिश जी, मो.नं. - 9422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला (महाराष्ट्र)

पलवल
वीर सिंह चौहान मो.9991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर-14, पलवल (हरि.)

बरैली
कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074,विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई) जिला - बरैली- (उ.प्र.)

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन,मो.-09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली, हजारीबाग (झारखण्ड)

परभणी (महाराष्ट्र)
श्रीमती मंजु दरड़ा-मो. 09422876343

खरसिया
श्री बजरंग बंसल,मो.-09329817446
शान्ति ड्रेसेज, नियर चन्दन तालाब शनि मन्दिर के पास,खरसिया (छ.ग.)

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,मो.-09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52-सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मु-180001

नरवाना(हरियाणा)
श्री धर्मपाल गर्ग,मो.-09466442702,
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग मो.-9728941014
165-हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी नरवाना,जीन्द

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

सुमेरपुर (राज.)
श्री गणेश मल विश्वकर्मा,मो. 09549503282
अंचल फाउण्डरी, स्टेशन रोड़, सुमेरपुर, पाली

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,मो. 9829960811,
ए.14, 'गिरधर-धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी चित्तौड़ रोड़, बून्दी (राज.)

कैथल
श्री सतपाल मंगला,मो. 09812003662-3
68-ए, नई अनाज मंडी, कैथल

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,मो.-09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर (छ.ग.)

बालोद
बाबूलाल संजय कुमार
जैन मो. 9425525000,रामदेव चौक बालोद, जिला-बालोद (छ.ग.)

मथुरा
श्री दिलीप जी वर्मा
मो. 08899366480
1, द्वारिकापुरी,कंकाली, मथुरा (उ.प्र.)

धनबाद(झारखण्ड)
श्री भगवानदास गुप्ता-09234894171
07677373093 गांव-नापों खुर्द,पो.-गोसाई बलिया,जिला-हजारीबाग (झारखण्ड)

मुम्बई
श्री प्रेम सागर गुप्ता ,मो. 9323101733
सी-5, राजविला, बी.पी.एस. 2 क्रोस रोड़,वेस्ट मुलुंड, मुम्बई

बरैली
विजय नारायण शुक्ला
मो. 7060909449,मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरैली (उ.प्र.)

दीपका, कोरबा (छ.ग.)
श्री सूरजमल अग्रवाल,मो. 09425536801

हाथरस (उ.प्र.)
श्री दास बृजेन्द्र,मो.-09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन,सादाबाद

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा,मो.-09024749075,
के.वी. पब्लिक स्कूल,
35 लादिया,बाग अलवर (राज.)

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट - बिघरी, त. बदसर
जिला हमीरपुर - 176040 (हिमाचलप्रदेश)

हमीरपुर
श्री रसील सिंह मनकोटिया ,मो. 09418061161
जामलीधाम, पोस्ट-रोपा, जिला-हमीरपुर-177001

झारखण्ड
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी,मो. 7992262641,
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट
राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़ (झारखण्ड)

वो दुबला-पतला, बीमार बच्चा कैसे बन गया दुनिया का नामी पहलवान

सैंडो एक दुबला–पतला बालक था। जब वह 11–12 बरस का था तो उसे जुकाम रहने लगा। खांसी उसे लगातार परेशान करती थी और लिवर भी बढ़ा हुआ था। एक दिन वह अपने पिता के साथ अजायबघर देखने गया। अजायबघर में उसने बलिष्ठ कद–काठी की अनेक इंसानी मूर्तियां देखी। उसने अपने पिता से पूछा, ये किनकी मूर्तियां है ? पिता ने कहा, इस दुनिया में हमसे पहले जो इंसान थे, ये उनकी मूर्तियां है, तब सैंडो ने अगला सवाल किया, ये जो हमारे पूर्वजों की मूर्तिया यहां रखी हुई हैं, क्या उनकी शक्लें ऐसी ही थी ? उनकी गर्दन भी इसी तरह मोटी थी? क्या उनके सीने इतने ही चौड़े थे?

पिता बोले, हां बेटे, वे जैसे थे उसी तरह उनकी मूर्तिया बनाई गई हैं। बच्चे ने फिर पूछा, पिताजी क्या मैं भी ऐसा बन सकता हूं? पिता ने उसे दुलारते हुए कहा, जरूर बन सकते हो। दुनिया का एक इंसान जो काम कर सका, उसे दूसरा इंसान भी कर सकता है, जो रास्ता एक के लिए खुला है, वह दूसरों के लिए भी खुला है। समय ज्यादा लग जाए या कम, लेकिन एक आदमी ने जो काम कर लिया, वह दूसरे के लिए नामुमकिन नहीं है।

म्यूजियम से वापस आने के बाद भी सैंडो के मन से वह बात गई नहीं थी। वह पिता के पास पहुँचा और बोला, बताइए, मैं कैसे पहलवान बन सकता हूं ? पिता ने विस्तार से बताया कि तुम अपने खान–पान और दिनचर्या में इस तरह से नियंत्रण करो, ऐसे कसरत करो, विचारों का संयम ऐसे करो, यह कहते हुए पिता ने प्रारंभिक ढांचा बनाकर उसके सामने रख दिया। बालक ने अपनी दबी हुई सामर्थ्य को समझा और उसका ठीक प्रकार से इस्तेमाल करते आगे चलकर विश्व का नामी पहलवान डैमियन सैंडो बना।

सम्पादकीय

सेवा जब भी, जिस भी भाव से की जाये वह श्रेष्ठ ही है। अनेक लोग सेवा प्रदर्शन के लिये करते हैं, पर इसमें भी क्या बुराई है? किसी की सेवा तो होती ही है। कई लोग सेवा अपने उपकार भाव को प्रकट करने के लिये करते हैं, यह भी सेवार्थी के लिये तो लाभप्रद ही है। कुछ लोग सेवा को पुण्य कार्य समझकर करते हैं, कुछ लोग सेवा को मानवता समझ कर करते हैं तो कुछ कर्तव्यवश। सभी प्रकार की सेवायें सेवादार को जो भी अनुभूति दे किन्तु लाभार्थी को तो लाभ ही पहुँचाती है। सेवा शब्द ही इतना पावन है कि वह भले ही स्वार्थ से भी की जाये तब भी वह सेवा ही है। जिसकी सेवा की जा रही है, उसे तो उसका लाभ मिल ही रहा है।

इन सब सेवाओं में सिरमौर यदि माने तो जब सेवा स्वभाव बन जाये तब वह श्रेष्ठ हो जाती है। मनुष्य का स्वभाव हो जाय किसी की सेवा करना तो वह प्रकृति व परमात्मा के निकट हो जाता है। इसलिये सेवा कैसे भी प्रारंभ करें पर अंततः इसे स्वभाव बनाना है।

कुछ काव्यमय

मनसा, वाचा, कर्मणा
सेवा बने स्वभाव।
तभी मनुज के भाव का,
होता सही उठाव।
सेवा वाले हाथ ही,
पावन माने जाय।
सेवा बने स्वभाव तो,
सेवादार तर जाय।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

कर्मफल

यदि करुणामय खेत हो,
सत्य का बीज उगाय
प्रेम फसल लहराये,
आनन्द के फल खाय।।

आनन्द मंगल छाये महाराज, बोलते–बोलते हृदय की सब मांस पेशियों में आनन्द मंगल छा गया महाराज। भाइयों और बहनों, देवियों और सज्जनों आप सबको राम–राम करता हूँ। जय श्री कृश्ण, जय जिनेन्द्र करता हूँ। प्रेममय, करुणामय, दयामय, सरलतामय, सादगीमय, मीठा वचनमय। यदि खेत हो, अब कहोगे– महाराज वचन का और खेत का क्या? अरे भाई खेत यदि अच्छा हो और प्रेम के बीज रूपी फसल उगाई जाये तो फिर प्रेम की फसल तो लहलहायेगी और खेत यदि बंजर है, मतलब हमारे कर्महीन नर पावत नाहीं। कर्महीन जो विरंचि गुरु मिल जावे तब भी वे सुधर नहीं सकते।

हमें कर्महीन नहीं बनना अपने तो कर्मवान बनना, सत्कर्मी बनना। करें सदा सत्संग, ऐसा सदा सत्संग में रहना तो अपनी भावना अच्छी रहेगी। खेत यदि अच्छा, बीज भी अच्छा तो फसल अच्छी। अब अपने जीवन को मान लेवें कि– अपने जीवन को खुशी–खुशी गुजारना भी अपने हाथ में और दुखी रखके रोते रहना भी अपने हाथ में।

एक बार क्या हुआ साहब कि एक बहुत बड़ी मंजिल पर कोई घंटा बजाने के लिये ऊपर चढा। अब एक आदमी नीचे से देख रहा था तो वो घंटा बजाते– बजाते नीचे गिर गया। अब नीचे गिर गया तो जो ठीक नीचे देख रहा था उसके कंधे पर गिर गया। अब उसके बेचारे के तो कंधे टूट गये और उस आदमी के लगी ही नहीं। अब उसको हॉस्पीटल में किसी ने पूछा कि बहुत तकलीफ होने के कारण रो रहे हो क्या? बोला– मैं रो इसलिये रहा हूँ कि अपराध किसने किया और सजा किसको मिली। गिरा तो वो और कंधा मेरा टूटा। तो भाई ये तो कर्म की रचना है।

– कैलाश 'मानव'

क्रोध और धैर्य

जब युधिष्ठिर गुरु द्रोणाचार्य के पास विद्याध्ययन के लिए गए तो प्रथम दिन गुरु द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर एवं अन्य शिष्यों को सिखाया कि क्रोध नहीं करना चाहिए क्योंकि क्रोध अपनी माँ को खा जाता है। उसके पश्चात् गुरु द्रोणाचार्य ने अनेक बातें सिखाई, परन्तु युधिष्ठिर उस क्रोध वाले पाठ में ही अटके रहे। उसी पाठ को सीखते रहे। युधिष्ठिर गुरु द्वारा पढ़ाए गए अन्य पाठों को नहीं सीख पाए।

उन्होंने मन में ठान लिया था कि जब तक यह पाठ समझ में नही आ जाता, तब तक आगे के पाठ मैं नहीं सीखूँगा। कुछ समय पश्चात् परीक्षा आयोजित की गई। कोई अन्य परीक्षक थे, जिन्होंने सभी की परीक्षा ली। युधिष्ठिर अन्य सभी विद्यार्थियों से पीछे रहे। युधिष्ठिर प्रथम पाठ से सम्बन्धित प्रश्नों के ही उत्तर दे पाए, अन्य पाठों के प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाए। परीक्षक ने युधिष्ठिर से कहा– तुम परीक्षा में असफल हुए हो। तुम्हें दण्ड मिलेगा। अपना हाथ बढ़ाओ।

परीक्षक ने युधिष्ठिर के हाथ पर डंडे से सौ प्रहार किए। परन्तु युधिष्ठिर के मुख पर, पहले प्रहार से सौंवे प्रहार तक शांति समान रूप से बनी रही। वे तनिक भी क्रोधित नहीं हुए। जब गुरु द्रोणाचार्य ने यह दृश्य देखा तो उन्होंने परीक्षक से पूछा –क्यों मार रहे हो?

परीक्षक ने उत्तर दिया– इसे 'क्रोध नहीं करना' वाले पाठ के अतिरिक्त और कुछ नहीं आता है।

तब गुरु द्रोणाचार्य ने कहा– वास्तव में, युधिष्ठिर ने ही 'क्रोध नहीं करना' वाले पाठ को समझा है, क्योंकि इसके मुख की शांति पहले प्रहार से लेकर अंतिम प्रहार तक एक समान बनी रही। इसने तनिक भी क्रोध नहीं किया। पाठ पढ़ाना तो आसान है, परन्तु उसे जीवन में आचरण में उतारना बहुत कठिन कार्य है।

–सेवक प्रशान्त भैया

चलने लगे लडखड़ाते कदम, जागा विश्वास जिन्दगी के लिये

शब्बीर हुसैन के परिवार में छः सदस्य है। पिता जी कॉस्मेटीक की दुकान चलाते हैं। जन्म के डेढ़ वर्ष बाद अचानक तेज बुखार से शब्बीर बेहोश हो गया। और होश आने पर उसने पाया कि उसके पांव पूरी तरह बेजान हो चुके थे। पूरा शरीर निष्क्रिय हो चुका था। श्री गुलाम मोहम्मद पिता ने शब्बीर को श्री नगर के एक अस्पताल में दिखाया तो डॉक्टर ने बताया कि शब्बीर को पेरेलाइसिस हो चुका है इसका कोई इलाज नहीं है। गुलाम मोहम्मद ने शब्बीर को अन्य कई अस्पतालों में दिखाया लेकिन कहीं से भी आशाजनक उत्तर न मिलने पर गुलाम मोहम्मद टूट से गये।

एक दिन टी.वी. पर नारायण सेवा संस्थान का कार्यक्रम देखकर गुलाम मोहम्मद के दिल में शब्बीर के पांवों पर चलने की उम्मीद जागने लगी।

कुछ दिन कार्यक्रम देखने के पश्चात् उन्होंने संस्थान में फोन किया और संस्थान से सकारात्मक उत्तर पाकर गुलाम मोहम्मद अपने पुत्र शब्बीर को लेकर नारायण सेवा संस्थान में आये । और शब्बीर के पांवों के दो सफल ऑपरेशन हुए शब्बीर के पांवों में नई जान आने लगी । ऑपरेशन से पूर्व शब्बीर की टांगे टेढ़ी थी। वह चलने – फिरने में बिल्कुल ही असमर्थ था। ऑपरेशन के बाद शब्बीर सामान्य रूप से अपने पांवों पर खड़ा होकर चलने लगा है।

शब्बीर जैसे ओर भी कई दिव्यांग – बंधु जिनका जीवन घर की चार दिवारी तक ही सिमट कर रहा गया है, उन्हें अपने पांवों पर खड़ा कर जीवन की मुख्यधारा में शामिल करने का सफल प्रयास नारायण सेवा संस्थान कर रहा है। संस्थान के ये सफल प्रयास आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही संम्भव हो पा रहे है।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

जीप चलाने के लिये एक ड्राइवर भी रख लिया। कैलाश को लगता कि ड्राइवर की तनखा के पैसे क्यूं जाया किये जाय। इसके साथ ही ड्राइविंग सीखने की उसकी इच्छा बलवती होने लगी। धीरे–धीरे खाली समय में वह ड्राइवर से गाड़ी चलाना सीखने लगा। जब गाड़ी थोड़ी थोड़ी चलाना आ गया तो ड्राइवर प्रशंसा करने लगा कि आप तो इतने कम समय में ही इतनी अच्छी गाड़ी चलाने लग गये हो। कैलाश को उसकी बात सुनकर घमण्ड आ गया और वह बिना ड्राइवर के सहायता के ही गाड़ी चलाने लग गया। एक दिन वह ड्राइवर के साथ देबारी की तरफ जा रहा था। सुनसान सड़क थी, आने जाने वाले वाहन बहुत कम थे, नौसिखिये ड्राइवर का ऐसी जगह अपना हाथ आजमाने का बहुत जी करता है। कैलाश के साथ भी यही हुआ, उसने ड्राइवर को नीचे उतारा और गाड़ी को तेजी से आगे ले चला। कैलाश के आनन्द की सीमा नहीं थी, वास्तविकता यह थी कि उसे गाड़ी पूरी तरह चलाना नहीं आता था, अचानक देबारी के मोड़ पर गाड़ी अनियन्त्रित हुई और 40 फुट नीचे गड्ढे में जा गिरी।

डाइविंग सीखते हुए एक बात उसे याद रह गई थी कि कभी भी अचानक गाड़ी का इन्जन बंद करना हो तो एक बटन खींचना है। गाड़ी के खादरे में गिरते ही कैलाश को एकदम यह बात याद आ गई, उसने तुरंत यह बटन खींच लिया जिससे गाड़ी का इन्जन बंद हो गया। गाड़ी गिरते ही उछली थी, समय पर इन्जन बंद हो गया जिससे उसके प्राण बच गये वरना न जाने क्या हो जाता, यह सोच सोच करके ही वह ईश्वर को धन्यवाद देने लगा।

अंश-175

आँखों की हमेशा करें हिफाजत

- रात में सोने से पहले तथा सुबह उठने के बाद ठण्डे पानी से अपनी आँखे धोएं तथा पानी के छींटे मारें।
- तेज धूप तथा तेज रोशनी से अपनी आँखों को बचा कर रखें। इसके लिए आप चश्मे का प्रयोग कर सकते है लेकिन ध्यान रहे कि चश्मा अच्छी क्वालिटी का ही होना चाहिए।
- सुबह–सुबह हरी घांस पर नंगे पांव टहलना तथा हरियाली को देखने से भी आंखों की रोशनी को बढ़ाया जा सकता है।
- आंखों से बहुत ज्यादा समय तक लगातार काम न लें। लिखते व पढ़ते समय थोड़े– थोड़े अंतराल बाद आंखों को आराम दें।
- कंप्यूटर पर काम करते समय चश्मा जरूर पहनें। यदि आपको चश्मा न भी लगा हो तो बिना पावर का चश्मा पहनें।
- लगातार टकटकी लगाकर टी.वी. न देखे। थोड़ी–थोड़ी देर बाद इधर–उधर भी देखते रहें। इससे आंखों पर अधिक बोझ नहीं पड़ेगा।
- रात में सोते समय आंखों में गुलाब जल जरूर डालें।
- आंवले तथा विटामिन सी युक्त खाद्य पदार्थो के सेव से भी आंखों की रोशनी को बरकरार रखा जा सकता है।
- आंखों की एक्सरसाइज भी जरूर करें। इसके लिए अपनी आंखों की पलकों को बार–बार झपकाएं। पलकें उतनी जल्दी–जल्छी झपकें कि सामने वाली वस्तु नांचती हुई प्रतीत हो। यह प्रक्रिया पांच से इस बार अपनाएं। इससे आंखों की थकान कम होगी।

कर भला तो हो भला

एक नदी के किनारे वृक्ष की डाल पर एक कबूतर बैठा था। उसने देखा कि नदी में एक चींटी बड़े प्रयास के बावजूद भी किनारे पर नहीं आ पा रही है। कबूतर ने एक पत्ता चींटी के पास पानी में गिरा दिया। चींटी उस पत्ते पर चढ़ गई, पत्ता बहकर किनारे पर लग गया। चींटी ने पानी से बाहर आकर कबूतर का आभार व्यक्त किया। तभी एक बहेलिया चुपके से कबूतर को अपने बाँस में फँसाने का प्रयास करने लगा। कबूतर ने बहेलिये को नहीं देखा, परंतु चींटी ने देख लिया। चींटी ने कबूतर को बचाने के उद्देश्य मे तुरंत बहेलिये की जाँघ पर काट लिया, जिससे बाँस हिल गया और पेड़ के पत्ते खड़क गए। फलतः कबूतर सावधान होकर उड़ गया। जो दूसरे की सहायता करते हैं, उन्हें संकट में सहायता अवश्य मिलती है।

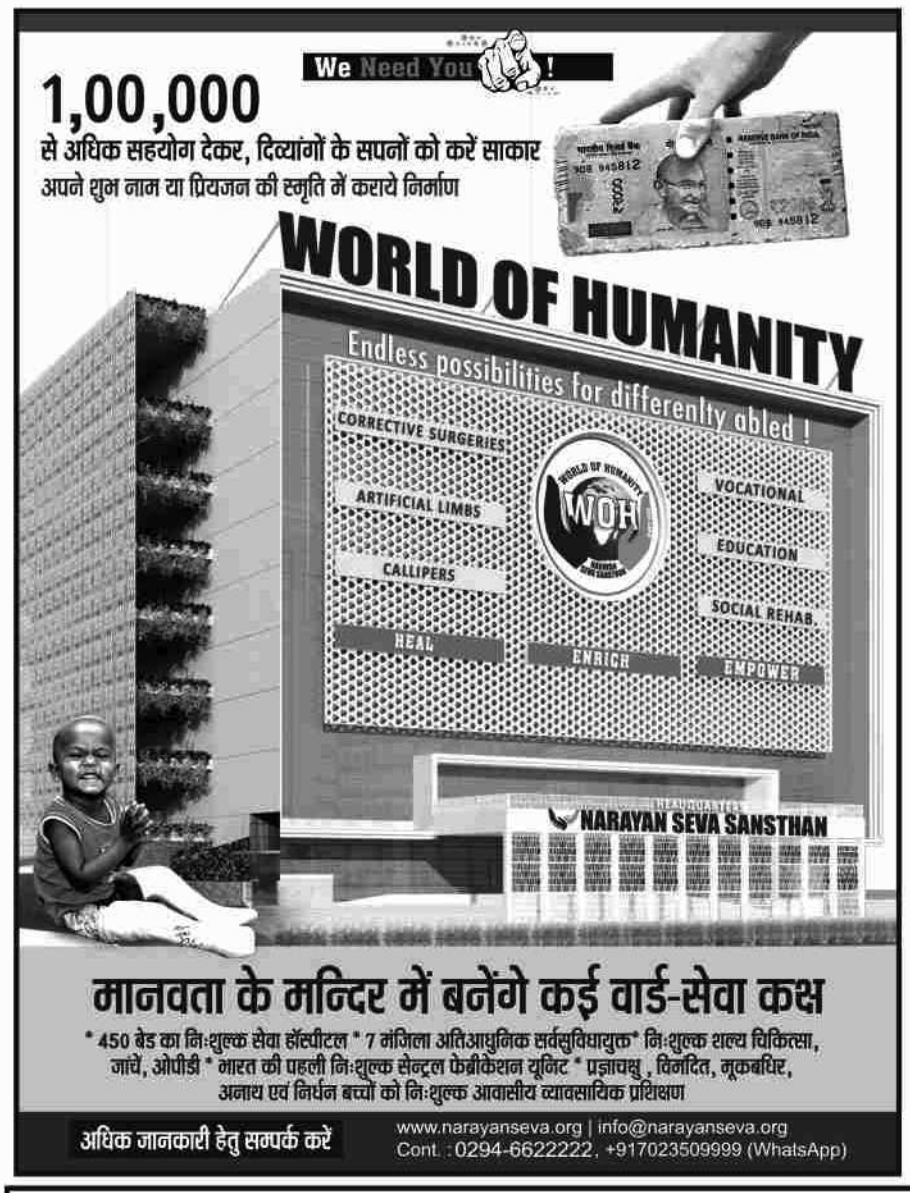

अनुभव अमृतम्

प्रभु की कृपा, लाला ठाकुर जी करवा देते हैं। अच्छी तरह से देख लिया कर्म तो करना ही है। क्योंकि कर्म का भाव ये है कि आज नया बीज बोना। कर्म के नये बीज बोना। उसका पाक होगा, अच्छा होगा। अच्छे कर्म करना, अच्छी वाणी रखना, अच्छे भाव रखना। और ये मलेशिया की प्रभु ने जो विदेश यात्रा करवायी उससे बाद में कई विदेश यात्रा और हुई। दो बार थायलैण्ड़ की राजधानी बैंकॉक जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जैन साहब जयपुर के रहने वाले बहुत मधुर भाषी, उन्होंने ठहराया। दोनों समय गर्म भोजन उन्हीं के यहाँ उनकी परम् आदरणीय धर्मपत्नी जी गर्म–गर्म फुल्के बनाती थी। बड़ी श्रद्धा के साथ ये श्रद्धा विश्वास, सत्य, इन्द्रिय निग्रह, क्षमा, बुद्धि यही तो धर्म के लक्षण है– बाबूजी। धर्म इति धारियति जो धारण किया जाये वो धर्म। बाकी खाली बोला जाये वो ये शब्द है, स्वर है, सरगम है, अच्छा है। बोलने से कुछ किंचित लाभ, श्रवण से किंचित लाभ, चिंतन से भी किंचित लाभ अवश्य होता है। लेकिन जो अनुभव किया जाये, वो अनित्य है। ये पूरा विश्व, पूरा ब्रह्माण्ड़, सबका शरीर, ये समुद्र, ये पृथ्वी सभी में प्रतिक्षण बदलाव आ रहा है। लेकिन सभी में प्रतिक्षण बदलाव बाद में कब समझेंगे?

सेवा ईश्वरीय उपहार– 55 (कैलाश 'मानव')

हर बूंद को बचाना है

पानी की एक–एक बूंद कीमती है। अपनी लापरवाही के चलते हम न जाने कितना व्यर्थ ही बहा देते हैं। अपनी सुविधा के लिए घरों में बर्तन धोने के लिए कामवाली का इंतजाम किया जाता है। ये सुबह ही काम पर आती है। हमारे घरों में दोपहर से ही गंदे बर्तन इकट्ठे होने शुरू हो जाते है, और रात के भोजन तक सिंक में जूठे बर्तनों का ढेर लग जाता है। अगले दिन तक ये बर्तन जूठन समेत सूख चुके होते हैं जिन्हें अगली सुबह धोने में सामान्य से दोगुना काफी पानी डाल दिया जाता है या नल चालू करके नीचे बर्तन छोड़ दिए जाते हैं। इस तरीके से भी अधिक मात्रा में पानी की बर्बादी होती है। पानी की इस अनावश्यक बर्बादी को रोकने के लिए एक नियम बनायें। बर्तनों को सिंक में रखने से पहले ही उनकी जूठन निकालकर थोड़े पानी की बर्तनों पर डालकर ही सिंक में रखे। इससे जूठन सूखती नहीं हैं और सुबह बर्तन धोने मे अधिक पानी का प्रयोग भी नहीं करना पड़ता।

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023